



राजभाषा दर्पण

वर्ष : 2023 * त्रैमासिक * अंक : 1



दक्षिण पूर्व रेलवे

चक्रधरपुर मंडल

संदेश



अरुण जातोह राठौड़
मंडल रेल प्रबंधक

राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा की त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा दर्पण' का ई-प्रकाशन अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। माल लदान में अग्रणी चक्रधरपुर मंडल राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करने की दिशा में भी सदैव प्रयासरत है। मुझे विश्वास है कि इस ई-पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों और कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति और रुचि उत्पन्न होगी तथा हम सभी को अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने की प्रेरणा मिलेगी।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग को बधाई एवं शुभकामनाएं।

मंडल रेल प्रबंधक
चक्रधरपुर

संदेश



विनय कुजूर
अपर मंडल रेल प्रबंधक

अत्यंत हर्ष की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा 'राजभाषा दर्पण' का ई-प्रकाशन प्रारंभ किया जा रहा है। वर्तमान दौर में पत्रिकाओं के ई-प्रकाशन का महत्व बहुत बढ़ गया है। इस पत्रिका के प्रवेशांक में मुख्य रूप से हिंदी साहित्य से जुड़ी रचनाओं को स्थान दिया गया है। आगामी अंकों में अन्य विषयों पर भी रचनाएं प्रकाशित की जाएंगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से हम सभी राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के प्रति और जागरूक होंगे।

'राजभाषा दर्पण' के प्रकाशन के शुभारंभ के लिए राजभाषा विभाग को हार्दिक शुभकामनाएं।

अपर मंडल रेल प्रबंधक
सह
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
चक्रधरपुर

ठाकुर का कुआँ

- प्रेमचंद

जोखू ने लोटा मुंह से लगाया तो पानी में सख्त बदबू आई। गंगी से बोला यह कैसा पानी है ? मारे बास के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा पानी पिलाए देती है !

गंगी प्रतिदिन शाम पानी भर लिया करती थी। कुआँ दूर था, बार-बार जाना मुश्किल था। कल वह पानी लायी, तो उसमें बू बिलकुल न थी, आज पानी में बदबू कैसी। लोटा नाक से लगाया, तो सचमुच बदबू थी। जरूर कोई जानवर कुएं में गिरकर मर गया होगा। मगर दूसरा पानी आवे कहां से ? ठाकुर के कुएं पर कौन चढ़ने देगा ? दूर से लोग डांट बताएंगे। साहू का कुआँ गाँव के उस सिरे पर है, परन्तु वहाँ कौन पानी भरने देगा ? कोई कुआँ गाँव में नहीं है। जोखू कई दिन से बीमार हैं। कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पड़ा रहा, फिर बोला- अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जाता। ला. थोड़ा पानी नाक बंद करके पी लूँ।

गंगी ने पानी न दिया। खराब पानी से बीमारी बढ़ जाएगी इतना जानती थी, परन्तु यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती हैं। बोली- यह पानी कैसे पियोगे ? न जाने कौन जानवर मरा है। कुएँ से मैं दूसरा पानी लाए देती हूँ।

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा-पानी कहाँ से लाएगी ?

ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं। क्यों एक लोटा पानी न भरने देंगे ?

हाथ-पांव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेगें, साहूजी एक पांच लेगें। गराबी का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे ?" इन शब्दों में कड़वा सत्य था। गंगी क्या जवाब देती, किन्तु उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया।

रात के नौ बजे थे। थके-माँदे मजदूर तो सो चुके थे, ठाकुर के दरवाजे पर दस-पाँच बेफिक्रे जमा थे मैदान में। बहादुरी का तो न जमाना रहा है, न मौका। कानूनी बहादुरी की बातें हो रही थीं। कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक खास मुकदमे की नकल ले आए। नाजिर और मोहतमिम, सभी कहते थे, नकल नहीं मिल सकती। कोई पचास माँगता। कोई सौ यहाँ बे-पैसे-कौड़ी नकल उड़ा दी। काम करने ढंग चाहिए।

इसी समय गंगी कुएँ से पानी लेने पहुँची।

कुप्पी की धुंधली रोशनी कुएँ पर आ रही थी। गंगी जगत की आड़ में बैठी मौके का इंतजार करने लगी। इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है। किसी के लिए रोका नहीं, सिर्फ ये बदनसीब नहीं भर सकते।

गंगी का विद्रोही दिल रिवाजी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा। हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँचे हैं ? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं ? यहाँ तो जितने हैं. एक-से एक छूँटे हैं। चोरी ये करें, जाल फरेब ये करें, झूठे मुकदमे ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़ेरिए की भेड़ चुरा ली थी और बाद में मारकर खा गया। इन्हीं पंडित के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहू जी तो घी में तेलमिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, मजूरी देते नानी मरती है। किस- किस बात में हमसे ऊँचे हैं, हम गली-गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे हैं, हम ऊँचे। कभी गाँव में आ जाती हूँ. तो रस-भरी आँख से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर साँप लोटने लगता है, परन्तु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं !

कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई। गंगी की छाती धक-धक करने लगी। कहीं देख ले तो गजब हो जाए। एक लात भी तो नीचे न पड़े। उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अँधेरे साए में जा खड़ी हुई। कब इन लोगों को दया आती है किसी पर! बेचारे महगू को इतना मारा कि महीनो लहू थूकता रहा। इसीलिए तो कि उसने बेगार न दी थी। इस पर ये लोग ऊँचे बनते हैं?

कुएँ पर स्त्रियाँ पानी भरने आयी थी। इनमें बात हो रही थीं। खाना खाने चले और हुकम हुआ कि ताजा पानी भर लाओं। घड़े के लिए पैसे नहीं हैं।

हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मरदों को जलन होती है। "हाँ, यह तो न हुआ कि कलसिया उठाकर भर लाते। बस, हुकुम चला दिया कि ताजा पानी लाओ, जैसे हम लौंडियाँ ही तो हैं।"

लौंडियाँ नहीं तो और क्या हो तुम? रोटी कपड़ा नहीं पाती? दस-पाँच रुपये भी छीन झपटकर ले ही लेती हो। और लौंडियाँ कैसी होती हैं!

'मत लजाओ, दीदी! क्षण भर आराम करने को जी तरस कर रह जाता है। इतना काम किसी दूसरे के घर कर देती तो इससे कहीं आराम से रहती। ऊपर से वह एहसान मानता! यहाँ काम करते-करते मर जाओ पर किसी का मुँह ही सीधा नहीं होता।

दोनों पानी भरकर चली गई तो गंगी वृक्ष की छाया से निकली और कुएँ की जगत के पास आयी। बेफिक्रे चले गए थे। ठाकुर भी दरवाजा बंद कर अंदर आँगन में सोने जा रहे थे। गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली। किसी तरह मैदान तो साफ हुआ। अमृत चुरा लाने के लिए जो राजकुमार किसी जमाने में गया था, वह भी शायद इतनी सावधानी के साथ और समझ-बूझकर न गया हो। गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढ़ी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी न हुआ।

उसने रस्सी का फंदा घड़े में डाला। दाएँ-बाएँ चौकनी दृष्टि से देखा जैसे कोई सिपाही रात को शत्रु के किले में सूराख कर रहा हो। अगर इस समय वह पकड़ ली गई तो फिर उसके लिए माफी या रियायत की रती भर उम्मीद नहीं। अंत में देवताओं को याद करके उसने कलेजा मजबूत किया और घड़ा कुएँ में डाल दिया।

घड़े ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही आहिस्ता। जरा-सी आवाज न हुई। गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे। घड़ा कुएँ के मुँह तक आ पहुँचा। कोई बड़ा शहजोर पहलवान भी इतनी तेजी से न खींच सकता था।

गंगी झुकी कि घड़े को पकड़कर जगत पर रखें कि एकाएक ठाकुर साहब का दरवाजा खुल गया। शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा।

गंगी के हाथ रस्सी छूट गई। रस्सी के साथ घड़ा धाम से पानी में गिरा और कई क्षण तक पानी में हिलकोरे की आवाजें सुनाई देती रहीं।

ठाकुर कौन है, कौन है? पुकारते हुए कुएँ की तरफ जा रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी।

घर पहुँचकर देखा कि लोटा मुँह से लगाए वही मैला गंदा पानी रहा है।

हरिवंश राय 'बच्चन'

हिंदी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में शामिल हरिवंश राय 'बच्चन' का जन्म 27 नवम्बर, 1907 को उत्तर प्रदेश में हुआ था। साहित्य प्रेमियों खासकर युवाओं के पसंद निःसंदेह 'दिनकर' और 'बच्चन' ही हुआ करते थे। 'बच्चन' जी राग से गाते थे, झुमाते थे, तन्द्रिल-मदहोश करते थे। आप एक उत्कृष्ट कवि और लेखक के साथ ही श्रेष्ठ अनुवादक भी रहे हैं।

हालावाद् काव्य के अग्रणी कवि 'बच्चन' जी ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'मधुशाला' उमर खैय्याम की रूवाईयों से प्रेरित होकर लिखी थी। बच्चन जी की शैली औरों से भिन्न थी, इसलिए उन्हें नवीन युग के आरंभ के रूप में जाना जाता है। आपका हिंदी के साथ ही अंग्रेजी पर भी समान अधिकार प्राप्त था। बच्चन जी ने शेक्सपियर की 'Macbeth' और 'Othello' का हिंदी रूपांतरण किया, जिसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जाता है। आपको पद्म भूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार, सरस्वती सम्मान एवं नेहरू अवार्ड सहित अनेक सम्मान प्राप्त हुए। आप राज्य सभा के मनोनीत सदस्य भी रहे हैं।

आपकी प्रमुख कृतियों में 'मधुबाला', 'मधुशाला', 'मिलन-यामिनी', 'निशा-निमंत्रण' तथा 'दो चट्टानें' आदि शामिल हैं। 18 जनवरी, 2003 को आपका स्वर्गवास हो गया।

जो बीत गई सो बात गई

- हरिवंश राय 'बच्चन'

जीवन में एक सितारा था
माना वह बेहद प्यारा था
वह डूब गया तो डूब गया
अम्बर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अम्बर शोक मनाता है
जो बीत गई सो बात गई

जीवन में वह था एक कुसुम
थे उसपर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुवन की छाती को देखो
सूखी कितनी इसकी कलियाँ
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ
जो मुरझाई फिर कहाँ खिली
पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुवन शोर मचाता है
जो बीत गई सो बात गई

जीवन में मधु का प्याला था
तुमने तन मन दे डाला था
वह टूट गया तो टूट गया
मदिरालय का आँगन देखो
कितने प्याले हिल जाते हैं
गिर मिट्टी में मिल जाते हैं
जो गिरते हैं कब उठते हैं
पर बोलो टूटे प्यालों पर
कब मदिरालय पछताता है
जो बीत गई सो बात गई

मृदु मिट्टी के हैं बने हुए
मधु घट फूटा ही करते हैं
लघु जीवन लेकर आए हैं
प्याले टूटा ही करते हैं
फिर भी मदिरालय के अन्दर
मधु के घट हैं मधु प्याले हैं
जो मादकता के मारे हैं
वे मधु लूटा ही करते हैं
वह कच्चा पीने वाला है
जिसकी ममता घट प्यालों पर
जों सच्चे मधु से जला हुआ
कब रोता है चिल्लाता है
जो बीत गई सो बात गई

दुष्यंत कुमार

हिंदी साहित्यकार दुष्यंत कुमार (01.09.1933- 30.12.1975) को अपने कालजयी गज़लों से अपार लोकप्रियता मिली।

वह कविता, नाटक, एकांकी, उपन्यास सदृश विधाओं में लेखन करते रहे थे, लेकिन उन्हें उनकी बेहतरीन गज़लों से ही प्रसिद्धि प्राप्त हुई। समय की विडंबनाओं को प्रश्नगत करती उनकी अभिव्यक्ति जनता के दिलों में गूँजती है और आम आदमी उनमें अपनी आवाज़ की तलाश कर पाता है। लोगों की जुबाँ पर चढ़ी उनकी गज़लें समय की परख करने और उससे लड़ने का हथियार बन सामने आती हैं।

‘सूर्य का स्वागत’, ‘आवाज़ों के घेरे’, ‘जलते हुए वन का वसंत’ उनके काव्य-संग्रह हैं जबकि ‘छोटे-छोटे सवाल’, ‘आँगन में एक वृक्ष’ और ‘दुहरी ज़िंदगी’ के रूप में उन्होंने उपन्यास विधा में योगदान किया है। ‘और मसीहा मर गया’ उनका प्रसिद्ध नाटक है। उनका इकलौता गज़ल-संग्रह ‘साये में धूप’ है, जिसकी गज़लें देश के संवाद और संबोधन में रोज़मर्रा का साथ निभाती हैं।

भारत सरकार द्वारा उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया है।

कहाँ तो तय था चरागाँ हरेक घर के लिए

- दुष्यंत कुमार

कहाँ तो तय था चरागाँ हरेक घर के लिए,

कहाँ चरागा मयस्सर नहीं शहर के लिए ।

यहाँ दरख्तों के साए में धूप लगती है,

चलें यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए ।

न हो कमीज़ तो पाँव से पेट ढक लेंगे,

ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए ।

खुदा नहीं न सही आदमी का ख्वाब सही ,

कोई हसीन नज़ारा तो है नज़र के लिए ।

वो मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता,

में बे-करार हूँ आवाज़ में असर के लिए ।

तेरा निज़ाम है सिल दे ज़बान-ए-शायर की ,

ये एहतियात ज़रूरी है इस बहर के लिए ।

जिएँ तो अपने बगैचा में गुल-मुहर के तले,

मरें तो ग़ैर की गलियों में गुल-मुहर के लिए ।

शब्द —ज्ञान

• Absence- अनुपस्थिति • Above mentioned-उपर्युक्त • Achievement- उपलब्धि • Acquittal-दोषमुक्ति • Act-अधिनियम • Additional- अपर • Advise-सलाह देना • Agenda- कार्यसूची • Allotment-आवंटन • Annexure-अनुलग्नक • Appointment- नियुक्ति • Appellant-अपीलकर्ता • Approval- अनुमोदन • Assets-परिसंपत्तियां • Audit- लेखा परीक्षा	• Basic- मूल • Balance-संतुलन / शेष • Benefit-लाभ • Breach-भंग • Bribe-घूस • Brief-संक्षिप्त • Cancel-रद्द • Capacity-क्षमता • Casual-आकस्मिक • Casualty-हताहत • Certificate-प्रमाण पत्र • Charge-प्रभार • Circular-परिपत्र • Compensation-मुआवजा • Concurrence-सहमति
--	---

उपयोगी पदबंध / Useful Phrases

Above cited /given : ऊपर दिया गया /उपरलिखित

After consultation with: से परामर्श करके

According to convenience: सुविधानुसार

As compared to : की तुलना में

Action is desired: कार्रवाई अपेक्षित है

As Directed: निदेशानुसार

An interim reply may be given: अंतरिम उत्तर दिया जाए

As a matter of fact : वस्तुतः

As and when : जब कभी

Act of misconduct : कदाचार / दुराचार

Application may be accepted: आवेदन स्वीकार /अस्वीकार कर दिया जाए

As per list enclosed/ attached: संलग्न सूची के अनुसार

As regards: के संबंध में

As required: आवश्यकतानुसार

विभागीय परीक्षा में पूछे जाने वाले राजभाषा संबंधी प्रश्न

प्र. भारत संघ की राजभाषा क्या है?

उ. देवनागरी लिपि में हिंदी ।

प्र. संसद में संविधान का भाग-17 किस तारीख को पारित हुआ ?

उ. 14 सितंबर 1949 ।

प्र. राजभाषा नियम के अधीन वर्गीकृत तीन क्षेत्र कौन-कौन से हैं?

उ. 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र ।

प्र. 'क' क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य कौन-कौन से हैं?

उ. बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र-दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र ।

प्र. ख क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य कौन-कौन से हैं?

उ. गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र ।

प्र. 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य कौन-कौन से हैं?

उ. 'क' और 'ख' में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न अन्य राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र ।

प्र. हर साल हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?

उ. 14 सितंबर को ।

प्र. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) कब से प्रभावी हुई?

उ. 26 जनवरी 1965 को ।

प्र. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 किससे संबंधित है?

उ. संसदीय राजभाषा समिति के गठन से संबंधित है ।

प्र. राजभाषा नीति की जानकारी देने वाले अनुच्छेद 343 से 351 संविधान के किस भाग में हैं?

उ. भाग 17 ।

प्र. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 7 का संबंध किसके साथ है?

उ. उच्च न्यायालय के निर्णयों में हिंदी या अन्य राजभाषा के वैकल्पिक प्रयोग से संबंधित है ।

प्र. राजभाषा अधिनियम 1963 की धाराएं 6 एवं 7 किस राज्य में लागू नहीं होती?

उ. जम्मू एवं कश्मीर ।

प्र. किन-किन राज्यों में उर्दू को राजभाषा के रूप में घोषित किया गया है?

उ. आंध्र प्रदेश एवं बिहार ।

प्र. रेल मंत्रालय का निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की कौन-सी उपसमिति करती है?

उ. दूसरी उपसमिति ।

प्र. केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के लिए हिंदी के कौन-कौन से पाठ्यक्रम निर्धारित हैं?

उ. प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ ।

'राजभाषा दर्पण' में प्रकाशनार्थ रचनाएं srrba.ckp@gmail.com पर ई-मेल की जा सकती हैं अथवा वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, चक्रधरपुर को भेजी जा सकती हैं ।

प्रकाशक : राजभाषा विभाग , चक्रधरपुर

संपर्क : 9771482002